ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

वर्ष 46 | अंक 29 | पृष्ठ 08 | दयानन्दाब्द 200 | एक प्रति ₹ 5 | वार्षिक शुल्क ₹250 | सोमवार, 19 जून, 2023 से रविवार 25 जून, 2023 | विक्रमी सम्वत् 2080 | सृष्टि सम्वत् 1960853124 |
दूरभाष/ 23360150 | ई-मेल/ aryasabha@yahoo.com | इन्टरनेट पर पढ़े/ www.thearyasamaj.org/aryasandesh |

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अंतरंग सभा बैठक संपन्न

गुरुकुल कांगड़ी सम विश्वविद्यालय के विषय में यू.जी.सी. अधिनियम 2023 एवं 2 वर्षिय आयोजनों को लेकर लिए गए महत्वपूर्ण निर्णय

गुरुकुल की संपत्ति की रक्षा हेतु मिलकर सामना करेगा आर्य समाज

–धर्मपाल आर्य

यह सर्वविदित है कि महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती और आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस को लेकर आर्य समाज द्वारा 2 वर्षीय ऐतिहासिक आयोजनों का क्रम लगातार चल रहा है। इसको और अधिक गति एवं गरिमा प्रदान करने तथा आर्य समाज के प्रचार-प्रसार और विस्तार को सुनिश्चित करने हेतु 18 जून 2023 को आर्य समाज, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली के प्रांगण में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अंतरंग सभा बैठक संपन्न हुई। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी की अध्यक्षता में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त अधिकारी तथा अंतरंग सदस्य, सभी वेदप्रचार मंडलों के अधि कारी, आर्य केंद्रीय सभा के अधिकारी, दिल्ली की विभिन्न आर्य समाजों के

- शेष पृष्ठ 4 पर

बैठक की अध्यक्षता करते हुए सर्वश्री धर्मपाल आर्य एवं ओमप्रकाश आर्य, शिवकुमार मदान, विद्यामित्र ठुकराल, विनय आर्य, सुखबीर आर्य, वीरेन्द्र सरदाना, शिवशंकर गुप्ता, सुरेन्द्र आर्य, सुरेन्द्र रैली, रविदेव गुप्ता, सतीश चडडा एवं सभी वेदप्रचार मंडलों के अधिकारी विचार विमर्श तथा ओम् ध्वनि के साथ हाथ उठाकर विभिन्न प्रस्ताव पारित करते हुए।

बैठक में पारित प्रस्तावों सहित लिए गए महत्वपूर्ण निर्णय

गुरुकुल की परंपरा और संस्कृति को जीवित रखने के लिए हर आवश्यक कदम उठाएंगे

> "दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अतंरग सभा बैठक में आर्य समाज की महान धरोहर, वैदिक धर्म और संस्कृति का पुरातन केंद्र, अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानंद जी द्वारा स्थापित गुरुकुल कांगड़ी (सम विश्वविद्यालय) को लेकर चल रहे विवाद के विषय में सभा महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने उपस्थित अधिकारियों को संपूर्ण घटनाक्रम से अवगत कराया। जिस पर सभी ने अपनी सकारात्मक एवं सारगर्भित प्रतिक्रियाएं व्यक्त की तथा हर स्थिति परिस्थिति में गुरुकुल कांगड़ी के संरक्षण का संकल्प लेते हुए एक स्वर में कहा कि किसी भी कीमत पर आर्य समाज की संपत्ति को सरकार के हाथ में नहीं जाने देंगे। सर्वसम्मति से सभा महामंत्री विनय आर्य जी को गुरुकुल कांगड़ी के विषय में कार्यवाही करने हेतु अधिकृत किया।"

- दिल्ली में एक वर्ष तक लगातार चलेगी वेद प्रचार रथ यात्रा
- समान नागरिक संहिता बिल के लिए सुझाव भेजने हेतु समिति गठित। सभी आर्य संस्थाएं अपने लेटर हेड पर सुझाव लिखकर ईमेल- **membersecretary-lci@gov.in** लिंक- **https://legalaffairs.gov.in/law_commission/ucc/** पर भेजें।
- सभी आर्य समाजों द्वारा महर्षि दयानंद सरस्वती जी की जीवनी का पहले वर्ष के 52 साप्ताहिक सत्संगों में स्वाध्याय किया जाए।
- दूसरे वर्ष में आर्य समाज का इतिहास पढ़ा जाए।
- मेरा परिवार आर्य परिवार और मेरी पहचान आर्य समाज के लिए कार्य किए जाएं।
- आर्य बाल वाटिका 1 से 6 वर्ष के बच्चों के लिए, आर्य कुमार सभा 6 से 12 वर्ष के बच्चों के लिए, आर्यवीर दल, आर्य वीरांगना दल 12 से 18 वर्ष के बच्चों के लिए और इसके उपरांत सभी को आर्य समाज का सदस्य बनाया जाए।
- आर्य समाज मेरी पहचान, इसके लिए सभी आर्य घरों में ओम का ध्वज, महर्षि दयानंद सरस्वती का चित्र, द्वार पर नमस्ते का स्टीकर लगा होना ही चाहिए।
- पहले वर्ष आर्य समाज के वार्षिक उत्सव और कथाओं के विषय महर्षि दयानंद सरस्वती के परोपकारी जीवन पर आधारित होगा।
- दूसरे वर्ष में आर्य समाज के इतिहास को स्थान दिया जाएगा।
- क्षेत्रीय प्रभात फेरी कम से कम 4 दिनों तक आयोजित की जाएं।
- 2025 के आर्यसमाज स्थापना दिवस 7 अप्रैल को अधिकतम संख्या दिवस के रुप में मनाया जाए।
- पुराने आर्य परिवारों का संकलन तथा 90 वर्ष से अधिक आयु वालों का सम्मान किया जाए, आर्य समाजों में 80 वर्ष का प्रांतीय स्तर पर और 90 वर्ष के महानुभावों को आर्य श्रेष्ठ सम्मान दिया जाए।
- आर्य समाज और महर्षि दयानंद के नाम से रोड, पार्क, चौक, चौराहों का नामकरण किया जाए।
- अधिक से अधिक महर्षि दयानंद के चित्र के साथ होर्डिंग्स लगाए जाएं।
- 200 व्यक्तियों तक पहुंचने के लिए 8447200200 पर मिस्ड कॉल करें सारी जानकारी प्राप्त करें।

सभा के कार्य

- आयोजन समिति द्वारा वर्ष में एक बड़ा आयोजन किया जाएगा।
- आर्य समाज के कार्यों की मॉनिटरिंग की जाएगी।
- देशव्यापी मशाल यात्रा की रूपरेखा बनाने हेतु सभी वेद प्रचार मंडल कार्य करेंगे और दिल्ली में यह यात्रा 15 दिन तक चलेगी।
- प्रांतीय सभाएं प्रांत स्तर पर 200 सरकारी, गैर सरकारी प्रतिष्ठित व्यक्तियों से संपर्क करेंगे।
- यात्रा के समय वैदिक साहित्य वितरित किया जाएगा।

वेदवाणी-संस्कृत

परम जातवेदा मुझे श्रद्धा और मेधा देवे

वेद-स्वाध्याय

अग्ने समिधामाहार्ष बृहते जातवेदसे।
स मे श्रद्धां च मेधां च जातवेदाः प्र यच्छतु॥
-अथर्व० 19 । 64 । 1
ऋषिः-ब्रह्मा॥ देवता-अग्निः॥ छन्दः-अनुष्टुप्॥

शब्दार्थ- **अग्ने**=हे प्रकाशस्वरूप प्रभो! **बृहते**=बहुत बड़े, परम **जातवेदसे**=जातमात्र के जानने वाले, ज्ञानयुक्त आपके लिए मैं **समिधम्**=समिधा को, प्रदीपनीय वस्तु को **आहार्षम्**=आहरण करता हूँ, लाता हूँ। **सः**=वह **जातवेदाः**=ज्ञानयुक्त अग्नि **मे**=मुझे **श्रद्धां च**=श्रद्धा को भी और **मेधां च**=मेधा को भी **प्रयच्छतु**=प्रदान करे।

विनय- जब समिधा अग्नि में डाली जाती है तो वह जल उठती है, अग्निरूप हो जाती है, समिधा में छिपी अग्नि उद्‌बुद्ध हो जाती है, प्रदीप्त अवस्था में आ जाती है। इसीलिए वैदिक काल के जिज्ञासु लोग समित्पाणि होकर (समिधा हाथ में लेकर) गुरु के पास आया करते थे, अपने को समिधा बनाकर गुरु के लिए अर्पित कर देते थे, जिससे कि वे अपने गुरु की अग्नि से प्रदीप्त हो जावें। उस वैदिक विधि के अनुसार मैं भी अपने आचार्य के चरणों में उपस्थित हुआ हूँ और उनकी अग्नि द्वारा उन-जैसा प्रदीप्त होना चाहता हूँ। मैं जानता हूँ कि प्रदीप्त हो जाना बड़ा कठिन है। प्रदीप्त होने से पहले अपने को जला देना होता है और यह अपने को जला देना तभी किया जा सकता है जब मुझमें पूर्ण श्रद्धा हो कि इस जलने द्वारा मैं अवश्य प्रदीप्त व ज्ञानमय हो जाऊँगा। इसलिए पहले तो मुझमें श्रद्धा की आवश्यकता है। इसी प्रकार गीली होने आदि किसी दोष के कारण यदि समिधा अग्नि को धारण न करे, तो भी वह प्रदीप्त नहीं हो सकती। इसलिए मुझमें ज्ञान के धारण करने वाली बुद्धि, मेधा की भी आवश्यकता है। श्रद्धा और मेधा के बिना मैं कभी ज्ञान से दीप्त नहीं हो सकता, पर इस श्रद्धा और मेधा को मैं और कहाँ से लाऊँ? मैं तो इन 'जातवेदाः' अग्नि से, अपने आचार्यदेव से ही प्रार्थना करता हूँ कि वे मुझे श्रद्धा और मेधा का दान प्रदान करें। वे जातवेदा हैं, उन्हें ज्ञान हो चुका है, वे ज्ञान की जलती हुई अग्नि हैं, अतः वे 'जातवेदा' यदि चाहें तो मुझे श्रद्धा और मेधा भी दे सकते हैं।

अन्त में मैं प्रातः-सायं भौतिक अग्नि के लिए अपनी जो काष्ठ की समिधा लाता हूँ, शिष्यरूप में आचार्याग्नि के लिए अपने शरीर-मन-आत्मा के प्रदीपनार्थ जो तीन समिधाएँ प्रतिदिन लाता हूँ, राष्ट्रसेवक या धर्मसेवक बनकर राष्ट्राग्नि या धर्माग्नि आदि के लिए जो तदुपयोगी समिधाएँ लाता हूँ, ये सब-की-सब समिधाएँ अन्त में उस 'बृहत् जातवेदाः' के लिए, उस सब-कुछ जानने वाले महान् अग्नि के लिए लाता हूँ जो सब आचार्यों का आचार्य है, सब अग्नियों का अग्नि है, परम-परम अग्नि है और अन्त में उसी 'बृहत् जातवेदाः' से श्रद्धा और मेधा की याचना करता हूँ जो कि परम श्रद्धामय है और मेधा का भण्डार है।

-:साभार:- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

समान नागरिक संहिता बिल पर सरकार को सुझाव भेजेगा आर्य समाज

संपादकीय

अंतरंग सभा की बैठक में दिल्ली सभा ने गठित की विशेष समिति

संपूर्ण संसार द्वंद्वमय है। यहां हर स्थान और स्थिति में द्वंद्व के दर्शन होना नितांत स्वाभाविक है। एक तरफ सृजन और दूसरी तरफ विध्वंस, एक तरफ विकास और दूसरी तरफ विनास दोनों स्थितियां साथ-साथ चलती हैं। लेकिन यह संसार हमेशा नव निर्माण करने वाले लोगों से ही गतिशील है। आर्य समाज सदा से ही भारत राष्ट्र की उन्नति, प्रगति, एकता, अखंडता के लिए संकल्पित होकर कार्य करता रहा है। इसके लिए हमारे पूर्वजों ने हर स्तर पर अपना बहुमूल्य योगदान और बलिदान दिया है। देश की आजादी से लेकर हर स्थिति, परिस्थिति में आर्य समाज ने अपनी वैदिक विचारधारा तथा सेवाभाव से देश को आशान्वित, गौरवान्वित और लाभान्वित ही किया है। लेकिन इसके विपरित कई तथा कथित स्वयं को धर्मावलंबी मानने वाले मतावलंबियों ने अपने आचरण और व्यवहार से हमेशा भारत देश के गौरव को लगातार चोट पहुंचाई है। जब भी कभी देश हित की बात आई तो उन्होंने अपने तुच्छ स्वार्थ के लिए राष्ट्र की उन्नति में अवरोध ही पैदा किए हैं। यूं तो स्वतंत्र भारत देश में सबको अपनी बात कहने का पूर्ण अधिकार है लेकिन इसका मतलब यह बिल्कुल नहीं है कि हम प्रत्येक सीधे कार्य को उल्टा ही कहेंगे, उचित को अनुचित, सत्य को असत्य सिद्ध करने में ही अपनी पूरी ताकत लगाते रहेंगे। इस कुप्रयास से किसी को कभी भी लाभ नहीं हो सकता।

वर्तमान में मीडिया के माध्यम से यह सर्वविदित है कि भारत सरकार समान नागरिक संहिता (यू.सी.सी.) बिल लाने की योजना बना रही है। लेकिन देश के कुछ लोग इसका नाम सुनते ही ठीक वैसे ही बिलबिलाने लगे हैं। उसी तरह जैसे धारा 370 और तीन तलाक के समय अपनी शैली में प्रतिक्रिया दे रहे थे, इनमें कुछ तुष्टिकरण करने वाली राजनीतिक पार्टी भी अग्रणी भूमिका में सक्रिय हो गयी हैं। लेकिन आर्य समाज हमेशा की तरह भारत राष्ट्र की एकता, अखंडता, संप्रभुता और उज्जवल भविष्य के लिए इस समान नागरिक संहिता बिल का पूर्ण समर्थन करता है। ज्ञात हो कि इस महत्वपूर्ण बिल के लिए भारत सरकार ने सारे देश से सुझाव भी मांगे हैं और लोग अपने सुझाव दे भी रहे हैं। इस क्रम में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा 18 जून को अंतरंग सभा की बैठक में सर्वसम्मति से बाकायदा प्रस्ताव पारित करके एक समिति गठित की गई जो कि आर्यजनों के सुझावों को संकलित करके सरकार तक पहुंचाने में सहयोगी की भूमिका निभाएगी और इस तरह संपूर्ण आर्य जगत इस अभियान में सहभागी और समर्पित भाव से अहम भूमिका का निर्वहन करेगा। क्योंकि यह कार्य तो बहुत पहले हो जाना चाहिए था, इससे देश को और सभी देशवासियों लाभ होगा।

अति महत्वपूर्ण सूचना

आप सभी भारत के नागरिकों को सूचित किया जाता है कि, भारत के 22वें विधि आयोग (कानून कमीशन/लॉ कमीशन) द्वारा, दिनांक- 14/06/2023 को, समान नागरिक संहिता (यूनिफॉर्म सिविल कोड) विषय पर, भारत के आम नागरिकों तथा भारत की पंजीकृत धार्मिक संस्थाओं से, उनके सुझाव व विचार मांगे गए हैं।

यह सुझाव व विचार, दिनांक- 13/07/2023 तक, ई-मेल के माध्यम से, अपने घर में बैठे हुए ही, अपने मोबाइल, लैपटॉप, या कम्प्यूटर से, भेजे जा सकते हैं। यह सुझाव व विचार, नीचे दिए गए ई-मेल पते पर अथवा लिंक पर भेजे जा सकते हैं:

ई-मेल : membersecretary-lci@gov.in

लिंक : https://legalaffairs.gov.in/law_commission/ucc/

आप सभी भारत के आम नागरिकों व धार्मिक संस्थाओं से निवेदन है कि, समान नागरिक संहिता के पक्ष में, अपने सुझाव व विचार, भारत विधि आयोग को, अवश्य भेजें। ताकि भारत के सभी नागरिकों, समाजों, धर्मों, पंथों, मजहबों, रिलिजनों, धर्मों पर समान कानून लागू हों सकें, न कि अलग-अलग कानून। यह संदेश सभी को भेजें!

वस्तुतः समान नागरिक संहिता का अर्थ है कि समाज के सभी वर्गों को उनके धर्म के बावजूद समान व्यवहार किया जाएगा, जो एक राष्ट्रीय नागरिक संहिता के अनुसार समान रूप से लागू होगा। विवाह, तलाक, रखरखाव, विरासत, गोद लेने और संपत्ति के उत्तराधिकार जैसे क्षेत्रों को यह कानून एकरूपता के साथ कवर करेगा। अब यहां पर विचारणीय यह भी है कि जब आपराधिक मामलों में सभी समुदाय के लिए एक कानून का पालन होता है तब सिविल मामलों में अलग-अलग कानून क्यों है? हमें यह समझना होगा कि निजी कानूनों में सुधार के अभाव में न तो महिलाओं की स्थिति बेहतर हो पा रही है और न ही उन्हें सम्मानपूर्वक जीने का अवसर मिल पा रहा है। असल में इससे सबसे बड़ी आजादी तो उन मुस्लिम महिलाओं को मिल सकेगी जो बहुविवाह और हलाला जैसी प्रथाओं का विरोध करती रहीं हैं। इससे न केवल समानता जैसे संवैधानिक अधिकार का लाभ प्राप्त होगा बल्कि समाज-सुधार जैसी पहल भी कामयाब हो सकेंगी। जब हर भारतीय पर एक समान कानून लागू होगा तो देश के सियासी दल वोट बैंक वाली सियासत भी नहीं कर सकेंगे और भावनाओं को भड़का कर वोट मांगने की गलत परंपरा पर भी लगाम लग सकेगी। दूसरी ओर मुस्लिम पर्सनल लॉ भी पूरी तरह सभी मुसलमानों के लिए समान नहीं हैं, उदाहरण के तौर पर देखें तो कुछ बोहरा मुसलमान उत्तराधिकार के मामले में हिंदू कानूनों के सिद्धांतों का पालन करते हैं।

वहीं संपत्ति और उत्तराधिकार के मामलों में अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग कानून चल रहे हैं। पूर्वोत्तर भारत के ईसाई बहुल राज्यों जैसे कि नागालैंड और मिजोरम में उनके अपने पर्सनल लॉ हैं। और वहां पर अपनी प्रथाओं का पालन होता है न कि धर्म का।

गोवा में 1867 का समान नागरिक कानून है जो कि उसके सभी समुदायों पर लागू होता है लेकिन कैथोलिक ईसाइयों और दूसरे समुदायों के लिए अलग नियम हैं, जैसे कि केवल गोवा में ही हिंदू दो शादियां आज भी कर सकते हैं। अतः भारत में समान नागरिक संहिता बिल केंद्र और राज्य दोनों स्तरों पर एक समान कल्याण कारी सिद्ध होगा।

समान नागरिक संहिता बिल की अगर ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर भी जाएं तो पता चलता है देश की आजादी से पूर्व समय से ही इस पर बहस चलती आ रही है। अक्टूबर 1840 की लेक्स

- शेष पृष्ठ 7 पर

संस्कार बोध

यज्ञोपवीत या जनेऊ

-पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय

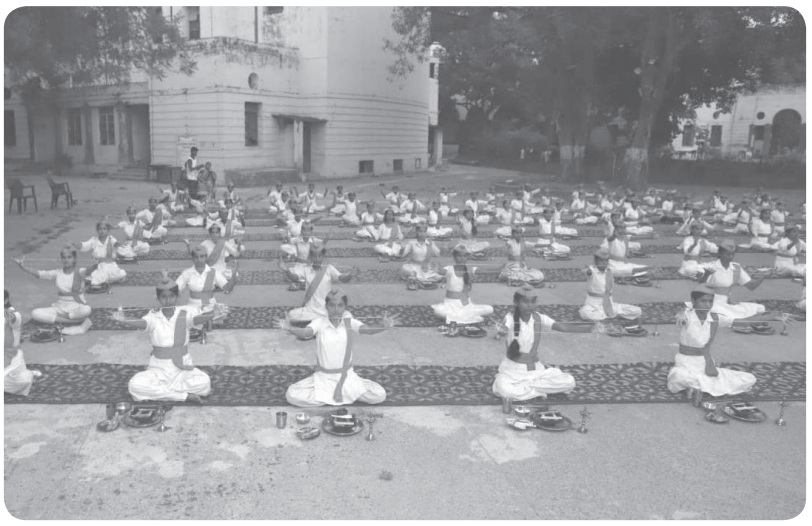

> **"पहले कल्प से कुमारियों का जनेऊ तथा मौंजीबंधन होता था। उनको वेद भी पढ़ाया जाता था और गायत्री भी सिखायी जाती थी। स्त्रियाँ और शूद्र एक कोटि में नहीं आ सकते। जिस प्रकार पुरुष सव्रत और अव्रत हो सकते हैं इसी प्रकार स्त्रियां भी सव्रता और अव्रता या आर्या और अनार्या हो सकती हैं। जो पुरुष या स्त्री व्रत लेना ही नहीं चाहते या ऋणों को चुकाने का दायित्व अनुभव करने में असमर्थ हैं उनको यज्ञोपवीत देने का प्रश्न ही नहीं उठता। चाहे वह ब्राह्मण कुलोत्पन्न हों चाहे शूद्र-कुलोत्पन्न। परन्तु जो कर्तव्य पालन कर सकते हैं उनको यज्ञोपवीत का पूर्ण अधिकार है।"**

क्रमशः गतांक से आगे

कादम्बरी में महाश्वेता के लिए लिखा है-

1. ब्रह्म सूत्रेण
पवित्री तकायाम्।

अर्थात् वह शरीर पर पवित्र ब्रह्मसूत्र या जनेऊ धारण किए थी।

2. तत्र ब्रह्मवादिनीनामुपनयनं वेदाध्ययनं स्वगृहे भिक्षाचर्या इति।

(हरीतस्मृति 21।13)

अर्थात् ब्रह्मवादिनी स्त्रियों के लिए उपनयन, वेदाध्ययन और अपने घर में भिक्षाचर्या विहित है।

3. स्त्रिय उपनीता अनुपनीताश्च।

(पारस्कर गृह्यसूत्र)

अर्थात् स्त्रियों के यज्ञोपवीत होते भी हैं और नहीं भी होते ।

4. प्रावृतां यज्ञोपवीतिनीमम्युदानयन् जपेत् 'सोमोददद्' गन्धर्वायेति।

अर्थात यज्ञोपवीत धारण करने वाली कन्या को दान करके 'सोमोददद्' वाला मन्त्र जपे।

5. पुराकल्पे कुमारीणां मौञ्जी बन्धनीमष्यते।
अध्यापनं च वेदानां सावित्री वचनं तथा।।

-यमस्मृति (पाराशरमाधव)

जो दायित्व के लिए असमर्थ हों- अर्थात् पहले कल्प से कुमारियों का जनेऊ तथा मौंजीबंधन होता था। उनको वेद भी पढ़ाया जाता था और गायत्री भी सिखायी जाती थी। स्त्रियाँ और शूद्र एक कोटि में नहीं आ सकते। जिस प्रकार पुरुष सव्रत और अव्रत हो सकते हैं इसी प्रकार स्त्रियां भी सव्रता और अव्रता या आर्या और अनार्या हो सकती हैं। जो पुरुष या स्त्री व्रत लेना ही नहीं चाहते या ऋणों को चुकाने का दायित्व अनुभव करने में असमर्थ है उनको यज्ञोपवीत देने का प्रश्न ही नहीं उठता। चाहे वह ब्राह्मण कुलोत्पन्न हों चाहे शूद्र-कुलोत्पन्न। परन्तु जो कर्तव्य पालन कर सकते हैं उनको यज्ञोपवीत का पूर्ण अधिकार है।

यों तो ब्राह्मण कुलोत्पन्न पागल या ऐसे रोगी को जो ब्रह्मचर्य्यव्रत नहीं ले सकता जनेऊ का कोई अधिकार नहीं है। यदि हम समझ लें कि पहले वर्ण गुणकर्म और स्वभाव के अनुसार होते थे न कि जन्म के तो अधिकार अनाधिकार का झगड़ा निबट जाता है। अब एक बात शेष रह जाती है। क्या यज्ञोपवीत संस्कार के समान अन्य धर्मों में भी कोई संस्कार होता है? ईसाई, मुसलमान आदि छोटे बड़े सभी धर्मों में कोई न कोई क्रिया ऐसी की जाती है जिससे मनुष्य उस धर्म सम्बन्धी कृत्यों के करने का अधिकरी हो जाता है। परन्तु पासी धर्म में जो इन सब की अपेक्षा वेदों से मिलता-जुलता और निकटतम है यज्ञोपवीत के समान ही एक संस्कार होता है। जिसको 'नवजोत' संस्कार कहते हैं। यह बालक के सातवें वर्ष होता है और अधिक से अधिक अवधि 15 वर्ष की है। इसमें दो वस्तुएं दी जाती हैं एक 'सुदरेह' जो श्वेत वस्त्र का कुर्ता सा होता है। इसके गले के सामने एक गांठ होती है जिसे उनकी भाषा में 'कीस्से ये केर्फ्रे'' या सवाव नी कोथरी' (पुण्य की थैली) कहते हैं। दूसरी 'कुस्ती' है जो कमर बन्द के समान एक चीज है। यह वैदिक मोञ्जी बंधन के सदृश होती है। इस नवजोत संस्कार के पश्चात मनुष्य जरथुस्ती धर्म के कृत्यों का अधिकारी हो जाता है। यह नवजोत संस्कार बहुत सी बातों में वैदिक उपनयन से मिलता-जुलता है। परन्तु जो सरलता उपनयन में है वह 'नवजोत' में नहीं।

स्वास्थ्य संदेश

उत्तम स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है तनाव मुक्ति

> **"तनाव की अतिसंवेदनशीलता के प्रभावों पर असर डालने वाले कारक तनाव के प्रति किसी व्यक्ति की संवेदनशीलता को किसी एक या इन सभी कारकों द्वारा प्रभावित किया जा सकता है, यानि इसका मतबल है कि हर व्यक्ति के तनाव के कारकों के प्रति सहनशीलता अलग-अलग होती है। और ये कारक उनके लिए निश्चित नहीं रहते, अतः समय के साथ हरेक व्यक्ति की तनाव सहनशीलता बदलती रहती है।"**

क्रमशः गतांक से आगे

यह एक प्रकार का कठिन तनाव है, जिससे बचा जाना चाहिए, क्योंकि लोग इसे अपने नियंत्रण से बाहर मानते हैं। तनाव पैदा करने वाले कारकों को छोटी अवधि (ऐक्यूट) या लंबी अवधि (क्रॉनिक) के रूप में वर्णित किया जाता है:

छोटी अवधि (ऐक्यूट) का तनाव तुरंत पैदा होने वाले खतरे के प्रति प्रतिक्रिया होता है, जिसे युद्ध या युद्धक प्रतिक्रिया भी कहते हैं। यह तब होता है, जब मस्तिष्क का प्रारंभिक हिस्सा और मस्तिष्क के अंदर के कुछ रासायन संभावित हानिकारक दबाव कारक या चेतावनी के प्रति अपनी प्रतिक्रिया प्रदर्शित करते हैं।

लंबी अवधि (क्रॉनिक) के तनाव कारक ऐसे दबाव होते हैं, जो लड़ाई करने की चाहत दब जाने के बाद चालू रहते हैं और आगे भी जारी रहते हैं। क्रॉनिक तनाव कारकों में शामिल होते हैं: वर्तमान में जारी दबावपूर्ण कार्य, वर्तमान में जारी संबंध से जुड़ी समस्या, अलगाव, तथा निरंतर वित्तीय चिंताएं।

तनाव तथा तनाव की अतिसंवेदनशीलता के प्रभावों पर असर डालने वाले कारक तनाव के प्रति किसी व्यक्ति की संवेदनशीलता को किसी एक या इन सभी कारकों द्वारा प्रभावित किया जा सकता है, यानि इसका मतबल है कि हर व्यक्ति का तनाव के कारकों के प्रति सहनशीलत अलग-अलग होती है। और ये कारक उनके लिए निश्चित नहीं रहते, अतः समय के साथ हरेक व्यक्ति की तनाव सहनशीलता बदलती रहती है।

बचपन का अनुभव (कोई दुर्व्यवहार जो तनाव की संवेदनशीलता को बढ़ा सकती है)

व्यक्तित्व (कुछ व्यक्तित्व अन्य की अपेक्षा तनाव के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं।)

जनेटिक्स (खासकर वंशानुगत 'रिलेक्सेशन रेस्पोंस, जो सेरोटोनिल स्तर से जुड़े हो, जो मस्तिष्क के 'स्वास्थ्य का रसायन' होता है।)

रोगनिरोधी असामान्यता (कुछ रोग उत्पन्न कर सकते हैं, जैसे गठिया तथा एक्जिमा, जिससे तनाव के प्रति लचीलापन कम हो सकता है।)

लाइफस्टाइल (मुख्यतः अपर्याप्त आहार तथा व्यायाम की कमी)

तनाव पैदा करने वाले कारकों की अवधि तथा उनकी तीव्रता।

तनाव की उपस्थिति के लिए त्वरित जांच के सूचक

निद्रा व्यवधान, भूख की कमी, अपर्याप्त एकाग्रता या अपर्याप्त याददाश्त, प्रदर्शन में कमी, अलक्षणात्मक त्रुटियां या पूरा न की गई समय सीमा, क्रोध या चिड़चिड़ापन, हिंसक या समाज के खिलाफ व्यवहार, भावनात्मक आवेग, शराब या ड्रग की आदत, घबराहट की आदत, तनाव के प्रभाव, शारीरिक प्रभाव।

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती के आयोजनों की श्रृंखला

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में

गुरुकुल पौंधा देहरादून के सुरम्य वातावरण में स्वाध्याय शिविर संपन्न

आर्य समाज के सिद्धांतों के अनुसार मानव जीवन में आहार की भांति स्वाध्याय का अपना अहम महत्व है। जैसे शुद्ध पौष्टिक आहार से शारीरिक बल बढ़ता है वैसे ही स्वाध्याय से आत्म बल की वृद्धि होती है। इसी तथ्य को आधार बनाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा हर वर्ष स्वाध्याय शिविरों के आयोजन किए जाते हैं। इस वर्ष महर्षि दयानंद सरस्वती की 200वीं जयंती के आयोजनों की श्रंखला में 29 मई से 2 जून तक गुरुकुल पोंधा, देहरादून के सुरम्य वातावरण में स्वाध्याय शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें सैकड़ों शिवरार्थियों ने महर्षि दयानंद सरस्वती के प्रेरक ग्रंथ आर्योद्देश्य रत्नमाला का विधिवत स्वाध्याय किया। शिविर के उद्घाटन अवसर पर डॉ. धनंजय शास्त्री, डॉ. मुकेश आर्य, सुधीर, आचार्य वीरेंद्र शास्त्री और अनेक अन्य शिवरार्थी एवं विद्वान उपस्थित थे। आचार्य योगेंद्र याज्ञिक होशंगाबाद ने विद्या अविद्या, जन्म मरण, स्वर्ग नरक, जड़ चेतन, तीर्थ, स्तुति निंदा, प्रार्थना उपासना, मुक्ति के साधन इत्यादि विषयों पर प्रेरक व्याख्यान दिए। आचार्य ओम प्रकाश गोयल जी ने ओंकार शब्द की व्याख्या की। प्रतिदिन प्रातः काल स्वामी योगेश्वरानंद जी के निर्देशन में योगासन और प्राणायाम कराया गया। गुरुकुल के ब्रह्मचारी विपिन आर्य जी ने प्रातः कालीन योगासनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। एवं योग साधना शिविर को सफल बनाने में श्री बृजकिशोर, श्री शिव देव आर्य ने यूट्यूब चैनल पर इसका सीधा प्रसारण किया। आर्य समाज शाहबाद मोहम्मदपुर दिल्ली से लगभग 27 महिला एवं पुरुषों सहित बालकों ने भाग लिया। जिनमें राजवती पांचाल, वीरमति सोलंकी, राजवती धामा, कृष्णा पांचाल, राजी देवी, राजबाला देवी, सरला देवी, संतोष, सुनीता सोलंकी, सत्यवती आर्य रोहतक ने रात्रि कालीन सत्संग में भजनों के द्वारा सुंदर प्रेरणा प्रदान की। स्वाध्याय समिति का सहयोग भी निरंतर प्राप्त होता रहा, जिसमें श्री सतीश चड्ढा जी शिविर अध्यक्ष एवं महामंत्री आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली राज्य ने स्लाइड एवं प्रिंटिंग के कार्यों में सराहनीय योगदान दिया। श्री सुखबीर आर्य, मंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सुझाव तथा मार्गदर्शन मिलता रहा। रामेश्वर दयाल गुप्ता जी, डॉ. मुकेश आर्य, शंभूनाथ तथा ओम प्रकाश रोहतक ने रात्रि सत्संग में सहयोग दिया। मीना आर्य, एस.पी. सिंह पूर्व मंत्री, देवेंद्र सचदेवा, उपाध्यक्ष ओमपाल सिंह आर्य आदि मानव उपस्थित रहे।

विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी भारत के विभिन्न राज्यों से स्वाध्याय प्रेमी जिनमें हरबंस लाल, लोकेश आर्य, ओम दत्त पांचाल, सुधीर गुप्ता, भानुदास, वेद प्रकाश शिवपुरी, रामेश्वर आर्य राजस्थान, अशोक आर्य, और 10 आदमियों की टीम के साथ शमशेर मध्य प्रदेश से पधारे, अजय सिंह, जयपाल नेगी आदि ने आयोजन से स्वाध्याय और योग साधना संबंधी लाभ उठाए। स्वाध्याय एवं योग साधना शिविर की सफलता की श्रंखला में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, योग्य एवं कर्मठ महामंत्री श्री विनय आर्य की भूमिका एवं कार्यशैली को विस्मृत नहीं किया जा सकता। आर्यों में स्वाध्याय के प्रति श्रद्धा बनी रहे और भविष्य में यह निरंतर बढ़ती रहे, उनकी प्रेरणा सराहनीय और प्रशंसनीय सिद्ध हुई।

स्वाध्याय शिविर के भव्य समापन समारोह में स्वामी प्रणवानंद जी, संस्थापक गुरुकुल पोंधा देहरादून ने स्वाध्याय एवं योग साधना शिविर को प्रत्येक दृष्टि से श्रेष्ठ व लाभकारी

- शेष पृष्ठ 6 पर

पृष्ठ 1 का शेष

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अंतरंग सभा बैठक संपन्न

प्रतिष्ठित और आमंत्रित अधिकारी उपस्थित थे। गायत्री मंत्र और ईश्वर स्तुति, प्रार्थना, उपासना, मंत्रों से बैठक का आरंभ हुआ।

12 मार्च से अब तक दिवंगत आत्माओं को मौन होकर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। गत बैठक से लेकर अब तक के आयोजनों और सेवा कार्यों की रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। जिसकी सभी ने संपुष्टि की। सभा महामंत्री श्री विनय आर्य जी सभी सेवाकार्यों का विस्तृत वर्णन किया, जिसकी सभी ने सराहना की। 29 मई से 2 जून 2023 तक गुरुकुल पोंधा देहरादून में आयोजित स्वाध्याय शिविर की समीक्षा की गई, जिसको सभी ने रचनात्मक कार्य बताया और भविष्य में और अधिक शिविर लगाने का विचार रखा।

पुनर्नवा योजना के क्रियान्वयन के विषय में विनय आर्य जी ने बताया कि अभी 13 आर्य समाजों ने इस महत्वपूर्ण योजना को लागू किया है और शीघ्र ही 10 आर्य समाजों को इससे और जोड़ा जाएगा। जो भी आर्य समाजों के अधिकारी इस रचनात्मक योजना को अपने आर्य समाज में स्थापित करना चाहते हैं उनका स्वागत है।

वेद प्रचार रथ यात्रा के महत्व और बढ़ते प्रभाव की समीक्षा करते हुए आपने कहा कि युवाओं को आर्य समाज से जोड़ने का यह अच्छा अभियान है, इसे एक वर्ष तक लगातार चलाना चाहिए। इसके माध्यम से आर्यवीर दल के शिविरों में बच्चे जा रहे हैं, जगह-जगह शाखाएं लग रही हैं, इस योजना की सफलता के विषय में श्री विनोद कालरा जी, द्वारका, श्री राजीव वर्मा जी, जी.के. पार्ट-1, डॉ. मुकेश आर्य जी, शाहबाद मोहम्मदपुर आदि ने अपने अनुभव बताए। सर्व सम्मति से वेदप्रचार रथयात्रा को लगातार एक वर्ष तक चलाने का प्रस्ताव पारित हुआ।

आर्य समाज के इतिहास लेखन को क्रियान्वित करने का निर्णय लिया गया। यूनिफॉर्म सिविल कोड के सुझावों को एकत्रित करने के लिए समिति गठित की गई। समाजों के विवादों हेतु समाधान समिति गठित की गई।

इस अवसर पर आगरा कैंट रेलवे स्टेशन पर वैदिक साहित्य बिक्री स्टॉल बनाने का भी वीडियो दिखाया गया और इस प्रचार कार्य को सफल बनाने में आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट का विशेष सहयोग रहा, इसके लिए सभी ने करतल ध्वनि से ट्रस्ट का धन्यवाद किया। महामंत्री जी ने विभिन्न समितियों की जानकारी देते हुए अधिकारियों का परिचय भी कराया और समिति के कार्यो की जानकारी भी दी।

आर्य समाज की महान धरोहर, वैदिक धर्म और संस्कृति का पुरातन केंद्र, अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानंद जी द्वारा स्थापित गुरुकुल कांगड़ी को लेकर चल रहे विवाद के विषय में जानकारी देते हुए महामंत्री जी ने बताया कि इस सम विश्वविद्यालय के संचालन हेतु पूर्व समय में प्रत्येक सभा के पांच-पांच सदस्य गुरुकुल की व्यवस्था को गति देते थे, अब सरकार द्वारा इसकी संख्या एक-एक कर दी गई। गुरुकुल कांगड़ी में पुरोहित की व्यवस्था भी समाप्त कर दी गई और 2 जून 2023 को नया अमेडमेंट आया, जिसके अनुसार अब कुलाधिपति की नियुक्ति भी सरकार करेगी तथा कुलपति भी हम अपना नहीं रख पाएंगे। इस मामले में हमारे साथ बहुत बड़ा धोखा हुआ है। डॉ. सत्यपाल जी की मंशा है कि इसे सेंट्रल यूनिवर्सिटी बना दिया जाए, सभाओं के मना करने के बावजूद भी वे इस दिशा में लगातार कार्य करते रहे तथा कुलपति को उन्होंने हटा दिया। अब विवाद काफी बढ़ गया है, परिणाम स्वरूप सभाओं ने डॉ. सत्यपाल जी को हटाने का मन बना लिया था और डॉ. सत्यपाल जी ने अपना इस्तीफा भी दे दिया था। किंतु यू.जी.सी. ने उनको बरकरार रखने का लेटर दे दिया था। मगर कोर्ट ने उस लेटर पर रोक लगा दी, लेकिन डॉ. सत्यपाल जी ने यूनिवर्सिटी में हुए कार्यक्रम में अध्यक्षता की और चांसलर की नियुक्ति भी की। इस पर कोर्ट की अवमानना का कारण बताओ नोटिस भी उन्हें दिया गया है।

अब सभा यह निर्णय करे कि हमें गुरुकुल कांगड़ी के विषय में क्या करना चाहिए। महामंत्री जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के निर्णय की जानकारी देते हुए सभासदों को बताया कि उन्होंने गुरुकुल कांगड़ी सम विश्वविद्यालय को केंद्रीय यूनिवर्सिटी बनाने का विरोध प्रस्ताव पास कर दिया है। इसकी जानकारी हरियाणा सभा के प्रधान जी ने उन्हें दी है। हमारा प्रयास है कि हम सरकार के अमेंडमेंट को स्वीकार नहीं करेंगे, इसके लिए हमें जो भी करना पड़े, उसके लिए हमें तैयार रहना होगा।

विषय की गंभीरता को देखते हुए उपस्थित सभी अधिकारियों ने अपने-अपने सुझाव और विचार प्रस्तुत किए तथा दिल्ली सभा की ओर से सर्वसम्मति से महामंत्री विनय आर्य जी को गुरुकुल कांगड़ी के लिए कार्यवाही करने के लिए अधिकृत किया। सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने कहा कि हम सरकार से कुछ भी तो नहीं लेते, सरकार द्वारा जो अनुदान मिलता है वह स्टाफ का वेतन होता है। अतः आर्य समाज की संपत्ति को हम किसी भी हालत में नहीं जाने देंगे। इस समय तीनों सभाएं एक साथ हैं, जैसी भी स्थिति होगी उसका सामना करेंगे। महामंत्री जी ने गुरुकुल कांगड़ी सोसाइटी की जानकारी दी और जो भी उसका सदस्य बनना चाहे आमंत्रण दिया। डॉ. सत्यकाम जी ने शांति पाठ कराया और सभा संपन्न हुई।

भारतीय रेलवे स्टेशनों पर होगा वैदिक साहित्य का प्रचार-प्रसार

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा सदैव आर्य समाज के प्रचार-प्रसार और विस्तार के लिए कृत संकल्पित है। इस क्रम में सभा द्वारा आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के सहयोग से भारतीय रेलवे स्टेशनों पर वैदिक साहित्य के बुक स्टालों का निर्माण किया जा रहा है। इसके पीछे सभा का उद्देश्य है कि भारत के कोने-कोने में और विदेशों में जन-जन तक महर्षि दयानंद सरस्वती जी की शिक्षाएं और आर्य समाज के सिद्धांत, मान्यता और परंपराओं को पहुंचाया जा सके। वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों से पूरी दुनिया परिचित हो तथा वेद की ईश्वरीय आज्ञाओं को अपने जीवन में धारण कर आर्य बनने का प्रयास करें।

इस क्रम में सभा ने भारतीय रेलवे से 10 स्टेशनों के प्लेटफार्म पर बुक स्टॉल निर्मित करने की स्वीकृति प्राप्त की है। जिनमें मिर्जापुर, फतेहपुर, अलीगढ़, वीरांगना लक्ष्मीबाई जंक्शन झांसी, ग्वालियर, मथुरा, आगरा फोर्ट तथा आगरा कैंट इन सभी रेलवे स्टेशनों पर वैदिक साहित्य के स्टाल निर्मित किए जाएंगे। अभी पिछले दिनों आगरा कैंट पर दिल्ली सभा का बुक स्टॉल बनकर तैयार हो गया है, जिसका शीघ्र ही शुभारंभ किया जाएगा। इसके निर्माण में आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट का विशेष योगदान रहा है तथा श्री सतीश चडडा जी, श्री सुखबीर सिंह आर्य जी, श्री ओम प्रकाश गोयल जी, डॉ. मुकेश आर्य जी ने प्रशंसनीय परिश्रम किया है। सभी का धन्यवाद और आर्य जगत को इस नए अभियान के लिए हार्दिक बधाई।

-महामंत्री

आगरा कैंट रेलवे स्टेशन पर बुक स्टॉल बनकर हुआ तैयार

'सहयोग' आर्य समाज का अनूठा सेवा प्रकल्प

आइए, हम सभी सहयोगी बनने का लें संकल्प

राष्ट्र एवं मानव सेवा को समर्पित आर्य समाज एक महान परोपकारी संगठन है। संसार का उपकार करना इसका मूल मंत्र और प्रमुख उद्देश्य है। अत: आर्य समाज लगभग पिछले 150 वर्षों से निरंतर सेवा साधना के पथ पर अग्रसर है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सेवा इकाई अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा भारत में एवं दिल्ली एन.सी.आर. में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के संयोजन में मानव कल्याण के लिए ''सहयोग'' एक ऐसा अनोखा, अनूठा सेवा प्रकल्प सिद्ध हो रहा है, जिसके माध्यम से अभाव ग्रस्त गरीब परिवारों में खुशियों की एक सुखद किरण प्रकट हुई है। यूं कहने को तो 21 सदी का पुण्यमय भारत देश विश्व की पांचवीं अर्थ व्यवस्था के रूप में विख्यात है। किंतु आज भी यहां असंख्य लोग अपनी मूलभूत जरूरतों से महरूम रह जाते हैं। जहां उनके पहनने के वस्त्र, जूते, चप्पल, सर्दी से बचाव के लिए कंबल और गर्म कपड़े, बच्चों के खेलने के लिए खिलौने और घर में पढ़ने पढ़ाने के लिए स्टेशनरी के सामान आदि की हमेशा कमी ही बनी रहती है। इस तरह के अभाव में हर आयु वर्ग के लोग घुट घुटकर जीवन जीने को मजबूर रहते हैं। दूसरी तरफ समाज में एक वर्ग ऐसा भी है जिनके पास उपरोक्त समस्त मूलभूत वस्तुओं की भरमार है और आवश्यकता से अधिक होने के कारण वे इन चीजों को घर में रखने से परेशान हो रहे हैं। वे अपने उपयोगी वस्त्रों, जैसे पेंट सर्ट, कुर्ता पायजामा, स्वेटर, कोट पेंट, सलवार, कमीज, साड़ी, गर्म कपडे, जूते चप्पल, सैंडल, बच्चों के खिलौनों, कापी किताब, स्टेशनरी के सामान, कंबल आदि के अतिरिक्त होने के कारण अनावश्यक रखरखाव से परेशान होकर या तो उन्हें कबाड़ में बेच देते हैं अथवा इधर उधर फेंक देते हैं।

सर्वे भवन्तु सुखिनः की भावना है- 'सहयोग'

अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के प्रधान श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी सहित अन्य अधिकारियों ने जब इस असमानता को अनुभव किया, एक तरफ इतनी सारी चीजों को कहां रखूं, कितना जमा करुं की समस्या है और दूसरी तरफ ऐसी दयनीय स्थिति है कि पर्व त्यौहार के सीजन में बच्चे नये कपड़े और खिलौनों की जिद् कर रहे हैं और गरीब माता पिता उन्हें झूठा दिलासा दे रहे हैं। सर्दी गर्मी में लोग परेशान हैं, इन सभी तथ्यों पर विचार करते हुए आर्य समाज के नेतृत्व को महर्षि दयानंद सरस्वती जी के जीवन से जुड़ी हुई वह घटना याद आई कि जब एक निर्धन मां ने अपने बच्चे के मृत शरीर से कफन उतारकर उसे जल में प्रवाहित कर दिया था। तब इस घटना को देखकर महर्षि दयानंद का कोमल हृदय द्रवित हो उठा था और उन्होंने अपने शरीर पर कम वस्त्र धारण करने का निश्चय कर सर्दी, गर्मी और बरसात में केवल एक कोपीन पहनकर रहना आरंभ कर दिया था। ऐसे दयालु महर्षि दयानंद सरस्वती के अनुयाई, सम्मानित अधिकारियों ने गरीब निर्धन जरूरतमंद लोगों को सहयोग देने के लिए एक विशेष सेवा योजना का शुभारंभ किया, जिसे आज हम सहयोग के रूप में जानते हैं। एक उदारता की भावना और ''सर्वे भवन्तु सुखिन:'' की कामना है- सहयोग। सहयोग काफी लंबे समय से दिल्ली एनसीआर और पूरे भारत में निर्धन बस्तियों में जाकर लोगों को पुराने किंतु उपयोगी वस्त्र, जूते, चप्पल, पुस्तकें, स्टेशनरी का सामान, खिलौने, गरम कंबल और अन्य अनेक उपयोगी वस्तुएं विधिवत सम्मान पूर्वक वितरण करता है।

'सहयोग' द्वारा सामान एकत्रिकरण और वितरण की सुंदर व्यवस्था

सहयोग के कार्यकर्त्ता पहले इन सभी वस्तुओं का उन घरों से, संस्थाओं से संग्रह करते हैं, जिनके पास ये सारे साधन अतिरिक्त या अनावश्यक हैं। सहयोग ने जगह जगह एकत्रिकरण के सेंटर और संपर्क बना रखे हैं, जहां से प्रतिदिन यह सामान एकत्रित किया जाता है और फिर उसे साफ सुथरा करके, पैक करके, जैसे वस्त्रों को धुलवाकर, प्रेस कराकर, पैकेट बनाकर जूते चप्पलों को पॉलिश कराकर या फिर स्टेशनरी और खिलौनों को कसौटी पर परखकर, इनका सेवा बस्तियों विधिवत् में वितरण किया जाता है। वितरण कार्यक्रम के अंतर्गत पहले वहां यज्ञ किया जाता है और उस यज्ञ में सभी आयु-वर्ग के लोग इकट्ठा होते हैं, आहुति देते हैं, प्रार्थना करते हैं, गायत्री मंत्र का उच्चारण करते हैं, दुर्गुण, दुर्व्यसनों से बचने के लिए संकल्प लेते हैं और फिर अपनी आवश्यकता अनुसार वस्त्र, बर्तन, खिलौने, स्टेशनरी, सर्दी गर्मी के कपड़े प्राप्त कर प्रसन्नता वक्त करते हैं। इस तरह से सहयोग नित-निरंतर मानव सेवा के कार्यों को करता आ रहा है।

कैसे बनें 'सहयोग' के सदस्य

- सहयोग में सहभागिता के लिए पहला बिंदु है कि आप जिन वस्त्रों का प्रयोग नहीं करते, उन उपयोगी वस्त्रों को स्वच्छ करके, प्रेस कराके, पैकट में रखकर अपनी नजदीकी आर्यसमाज अथवा सहयोग के सेंटर पर पहुंचाएं।
- इसी तरह से आप जिन जूते, चप्पलों का प्रयोग नहीं करते वे दूसरों के काम आने लायक हों तो उन्हें पोलिश कराके उन्हें भी पैकट में रखें और वस्त्रों की तरह सहयोग के लिए सेंटर पर भेजें।
- इस क्रम में आप खिलौने, पुस्तक, कॉपी, पैन, पेंसिल आदि उपयोगी वस्तुएं भी विधिवत जैसे किसी को गिफ्ट दिया जाता है वैसे ही पैक करके सहयोग के सहयोगी बनें।
- इस सारे समान को सहयोग स्वयं अपनी गाड़ी द्वारा प्राप्त कर लेगा और आप सहयोग के अनन्य सहयोगी सदस्य बन जाएंगे।

निवेदन:- आधुनिक परिवेश में हमें ऐसी विभिन्न सेवा योजनाओं को क्रियान्वित करना ही होगा, क्योंकि मानवता हमें पुकार रही है, अन्य अनेक तथाकथित दिखावटी, बनावटी संस्थाएं सेवा के नाम पर बढ़ चढ़कर ढोंग कर रही हैं, लोभ-लालच में भोले-भाले निर्धन लोगों कों विधर्मी बनाने पर तुली हुई हैं। अत: हमें अपने कर्तव्यों को समझना होगा और आर्य समाज की ओर से निरंतर सृजनात्मक कार्यो को गति देनी होगी। इसलिए आप दिल्ली अथवा एन सी आर में जहां भी रहते हैं वहीं अपने आर्य समाज में, आर्य शिक्षण संस्थान में या अपने गली-मोहल्ले में सहयोग का सेंटर बनाएं और इस अनुपम सेवा को वृहद अभियान का रूप देने में सहयोगी बनें दें।

आओ, करें सहयोग, शुभ कर्मों का योग

अधिक जानकारी प्राप्त करने, सहयोग से जुड़ने के लिए अथवा आप द्वारा एकत्र किया गया सहयोग जरुरतमंदों तक पहुंचाने के लिए मो. नं. 9540050322 पर सम्पर्क करें।

-व्यवस्थापक

Vedic Cosmogony in Nutshell

According to the Vedas, creation and dissolution are in a state of dynamic eternity, Following each other in a cyclic order from eternity to eternity. They further state that each cycle of creation is created by the Divinity in the identical manner even to the minutest detail ("Yathhaa-poorvamakalpayath", Rigved, 10.190.3, i.e., 'The Divinity creates as before'). The Vedas also propound that God is the efficient cause of creation, matter being the material or physical cause of the created objects and matter and soul being the material or physical cause of all creatures, all the three, (God, soul and matter), being coeternals, the last two, of course, working under suprintendence, direction, control and disposal of the first.

The present creation's various stages in due sequence, as outlined before in all details, may be given in a nutshell hereunder :—

The Divine Being, to start with, plans out creation and fixes His universal order in all details.

Thereafter, He activates the particles of the primeval or inactive matter by surcharging them with the prime moving force, resulting /in their proto-electronic movement. This active power remains with them for the duration of a particular cycle of creation.

These active particles (atoms and molecules), through the natural cohesion and diffusion, rush up at once to combine with one another, resulting in chaos or confused or unsettled state of affairs, called Ratri according to the Vedas.

After sometime, the whole thing settles down and the organised creation in rudiments is the result, including the five noumena—the refulgent, gases, liquids, solids and ether.

Then starts the universal movement of the primarily finished objects. This brings about various fast rotating unshapely or unsymmetrical huge round balls of fire in space called nebulae, permordial suns or Virat, which may be said to be countless.

During the course of time, various live masses split out from various early suns and get settled in space right round them. They are called planets or Grahas. The various suns, which in process of time become symmetrical, shapely or regularised, and their planets keep to their assigned positions through the force of gravitation, the suns concerntd attracting their planets, and vice versa.

As time rolls on, various dead masses shoot out from various planets and settle down around them in space and are called moons, satellites or Upagrahas. Planets and their moons keep to their respective assigned positions in space through the force of gravitation, planets attracting moons, and vice versa.

Planets rotate on their axes and revolve right round their suns on fixed orbits, and moons, revolving right round their planets on fixed orbits, along with them go round the suns concerned. The front side of moons, facing their planets, receives the sunlight and, after conceiving it for about ten hours, reflects it on the planets concerned. But their back side is in perpetual darkness. The Vedas speak of the moon of the earth in definite terms. The same should apply to all moons. The portions of various planets, facing their respective suns at a given time, receive sunlight and are said to have day for the time being, the other portions, being in darkness, having night for that time. The position changes with the continuous rotation of planets on their axes, when other portions come before the sun and receive sunlight and their opposite parts are in darkness.

A sun and its planets and satellites constitute a solar system (Saur Mandal). There are countless solar systems in the universe.

Confining now to our solar system, it should be said that the earth is one of the planets of this solar system having the moon that we are concerned with. The Vedas make it definitely clear that this earth of ours is the best planet of this solar system. The Vedic statement is also definite that the sun and the earth have the same composin.

The earth rotates on its axis (west to east) and revolves right round the sun (anticlockwise) on its fixed orbit. Its one complete revolution constitutes a year, which is divided into twelve solar months and six seasons depend ing on the position of the earth and the sun, the latter itself changes its position north and south about 23 degrees. On the 21st March and the 23rd September, the sun's rays fall directly on the equator (Vishuvath Rekha) and the day and the night are of equal duration.

To be continued in next issue

आर्योद्देश्यरत्नमाला पद्यानुवाद

कार्य-सृष्टि-जाति-मनुष्य

36-कार्य

जो पदार्थ संयोग से
बनकर आता काम ।
जो कि सदा करणीय है
'कार्य' उसी का नाम ।।47।।

37-सृष्टि

जो परमाणु सुयोग से
प्रभु रचना व्यवहार ।
कार्यरूप में चल रहा
वह है 'सृष्टि' अपार ।।48।।

38-जाति

जो कि जन्म से मृत्यु
तक रहे निरन्तर एक ।
व्यापकता से घेरती है
व्यक्तित्व अनेक ।।49।।
ईश्वरकृत जो मनुज, गौ,
अश्व, वृक्ष, बहु भांति ।
ऐसे सभी समूह ही
कहलाते हैं 'जाति' ।।50।।

39-मनुष्य

बिना बिचारे जगत में
जो न करे कुछ काम ।
वह 'मनुष्य' संसार में
चेतन का है, काम ।।51।।

साभार :
सुकवि पण्डित ओंकार मिश्र जी द्वारा पद्यानुवादित पुस्तक से

प्रेरक प्रसंग

हम वीर हैं, डरना क्या जानें?

देश की इस समय की सबसे बड़ी माँग यह है कि देश को वीर विप्र चाहिए। इस माँग को कौन पूरा करेगा? आर्यसमाज को ही यह कार्य करना है। राष्ट्रद्रोही क्रूर हत्यारे बैंक लूट लें, लुक-छुपकर स्टेनगनों से लोगों की हत्या कर दें, बम-फैक्टरियाँ बना लें, तो इनमें से किसी को फाँसी नहीं दी जाती। सद्भावना व एकता के नाम पर ऐसे लोगों को छोड़ दिया जाता है। इस प्रकार देश क्या बचेगा? आवश्यकता है देश को श्रद्धानन्द, लाजपत, सुभाष, सावरकर, स्वतन्त्रानन्द, नरेन्द्र (सोमानन्द) जैसे प्रणवीरों की। संकटों के सामने छाती तानकर हुँकारने वाले और घातकों को ललकारने वाले इन तेजस्वी पुरुषों का स्मरण करके आर्यजाति कायरों की 'अहिंसा' से मुक्ति पाए।

हैदराबाद सत्याग्रह के दिनों की बात है, पूज्य श्री महात्मा नारायण स्वामीजी महाराज रेल में यात्रा कर रहे थे। श्री महाराज एक पैसेंजर गाड़ी से पूना जा रहे थे। आप थर्ड क्लास के डिब्बे में बिस्तरा बिछाकर लेट गये। अभी गाड़ी शोलापुर से नहीं चली थी। जो आर्यजन विदा करने आये थे, वहीं खड़े थे कि एक व्यक्ति महाराज के पास आया और कहा कि जिस डिब्बे में वह है, उसमें और कोई नहीं, इसलिए आप वहाँ चलकर लेटें। महात्माजी सतर्क थे ही। एक आर्य को भेजा, जाओ उसका डिब्बा देखकर आओ, क्या इससे अच्छा है और वहाँ और कोई भी है? उसने लौटकर बताया कि छोटा-सा डिब्बा है। वहाँ चार, पाँच हैदराबादी मुसलमान हैं। उन्हीं के सिखाने पर वह पाजी महातमाजी को उस डिब्बे में लिवाने के लिए आया था। ऐसी घटनाएँ तब घटती रहती थीं, परन्तु हमारे नेता व आर्यजन शीश हथेली पर धरकर आगे बढ़े। शत्रु भी हाथ डालते हुए सोचता था। ऋषि दयानन्दजी से लेकर कृष्णराव ईंटेकर व उनकी पत्नी माता गोदावरी देवी तक न जाने कितने आर्यों ने वीरगति पाई। फिर भी देश, जाति के शत्रु आर्यसमाज से भयभीत थे। आर्यसमाज आतंकित न हुआ।

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

पृष्ठ 4 का शेष

बताया। भविष्य में शिविर संबंधी आयोजनों के लिए स्वयं के तत्पर रहने की बात कही। लाला दीनदयाल गुप्त जी, चेयरमैन डालर ग्रुप ने स्वाध्याय को वर्तमान युग की आवश्यकता बताया। इस अवसर पर डॉ. वेदपाल आर्य, डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री जी, डॉ. विनय विद्यालंकर आदि मंचासीन महानुभावों ने स्वाध्याय शिविरों के आयोजन के लिए दिल्ली सभा का धन्यवाद और आभार किया। डॉ. धनंजय शास्त्री, आचार्य चंद्र भूषण पाठक ने शिविर को सुचारू रूप से चलाने में यातायात, भोजन एवं आवास सुविधाएं प्रदान करने हेतु सक्रिय योगदान दिया तथा स्वाध्याय शील साधकों और उपस्थित महानुभावों का धन्यवाद किया।

-संयोजक डॉ. मुकेश आर्य 'सुधीर'
मंत्री आर्य केन्द्रीय सभा

ब्रेल लिपि में
महर्षि दयानन्द जीवनी
मात्र 1000/-रु
ब्रेल लिपि में
सत्यार्थ प्रकाश
मात्र 2000/-रु
अपने क्षेत्र के नेत्रहीनों/अंध विद्यालयों को अपने आर्यसमाज की ओर से भेंट करें।
-: प्राप्ति स्थान :-
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.)
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली, मो. 9540040339

पृष्ठ 2 का शेष

समान नागरिक संहिता बिल पर सरकार को सुझाव भेजेगा आर्य समाज

ला की रिपोर्ट के अनुसार इसने अपराधों, सबूतों और अनुबंधों से संबंधित भारतीय कानून के संहिताकरण में एकरूपता के महत्व और आवश्यकता पर बल दिया। लेकिन, इसने यह भी सिफारिश की कि हिंदुओं और मुसलमानों के व्यक्तिगत कानूनों को इस तरह के संहिताकरण से बाहर रखा जाना चाहिए।

उस समय स्वयं रानी ने 1859 में उद्घोषणा की थी- जिसमें धार्मिक मामलों में पूर्ण अहस्तक्षेप का वादा किया था। इसलिए जब आपराधिक कानूनों को संहिताबद्ध किया गया और पूरे देश के लिए आम हो गया, तब व्यक्तिगत कानूनों को अलग-अलग समुदायों के लिए अलग-अलग कोडों द्वारा शासित किया जाता रहा।

जबकि आजादी के बाद संविधान का मसौदा तैयार करने के दौरान, जवाहरलाल नेहरू और डॉ. बी. आर. अंबेडकर जैसे प्रमुख नेताओं ने एक समान नागरिक संहिता के लिए जोर दिया था। हालांकि, उन्होंने मुख्य रूप से धार्मिक कट्टरपंथियों के विरोध और समय के दौरान जनता के बीच जागरूकता की कमी के कारण यू.सी.सी. को राज्यनीति के निदेशक सिद्धांतों (डी.पी.एस.पी., अनुच्छेद 44) में शामिल किया। उस समय के कुछ सुधार इस प्रकार थे, जिनमें तलाक को वैध बनाया, बहुविवाह का विरोध किया, उत्तराधिकार अधिनियम 1956 मूल रूप से बेटियों को पैतृक संपत्ति में उत्तराधिकार का अधिकार नहीं देता था, वे केवल एक संयुक्त परिवार से भरण-पोषण का अधिकार मांग सकते थे। लेकिन 9 सितंबर 2005 को इस अधिनियम में संशोधन कर इस असमानता को दूर कर दिया गया था।

अब अगर मौजूदा भारत सरकार जिसके चुनावी घोषणापत्र में भी समान नागरिक संहिता बिल शामिल था और वह उसे वह पूरे वैधानिक तरीके से लाने के लिए प्रतिबद्ध है तो देश के सभी नागरिकों को उसका स्वागत करना चाहिए। क्योंकि केवल एक दो समुदायों के गलत निजी स्वार्थों के कारण पूरे देश की जनता के साथ भेदभाव नहीं किया जा सकता। अत: आर्य समाज सबसे यह अपील करता है कि समान नागरिक संहिता बिल का स्वागत करें और इसकी बेहतरी के लिए सरकार को अपने सुझाव भी अवश्य प्रेषित करें। **-संपादक**

आर्य समाज द्वारका द्वारा कार्यक्रम का सह आयोजन

आर्य समाज सैक्टर-11 द्वारका ने दिनांक 04 जून 2023 को 'जानकीधाम ओल्ड एज होम' द्वारा आयोजित 'रन विद पेरेटेस' कार्यक्रम में सह भागीदारी की। यह कार्यक्रम स्वामी श्रद्धानंद पार्क सैक्टर-11 के समीप आयोजित किया गया था। इस कार्यक्रम में आर्य समाज द्वारका की अत्यंत सक्रिय भागीदारी रही। आर्य समाज द्वारा इस अवसर पर वैदिक यज्ञ के अनुष्ठान के साथ भजनों का कार्यक्रम आयोजित किया गया। वैदिक यज्ञ आर्य समाज द्वारका के सदस्यों द्वारा संपन्न कराया गया। आर्य समाज के सुविख्यात भजनोपदेशक श्री देव आर्य जी ने भजन प्रस्तुत किए और देश भक्ति के भजनों से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस अवसर पर आर्य समाज द्वारका द्वारा प्रचार के लिए वैदिक साहित्य नि:शुल्क बांटा गया। यह साहित्य बांटते हुए कार्यक्रम में आए लोगों को आर्य समाज की स्थापना के उद्देश्य और महर्षि देव दयानंद के जीवन से अवगत कराया गया। 5 जून को मनाए जाने वाले विश्व पर्यावरण दिवस को ध्यान में रखते हुए लगभग 50 पौधों का नि:शुल्क वितरण किया गया और इस अवसर पर वृक्षारोपण भी किया गया। इस कार्यक्रम में लगभग 300 लोगों ने भाग लिया।

-मंत्री, विनोद कालरा

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

मात्र 300/-रु. सैंकड़ा

प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें

वैदिक प्रकाशन, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, मो. 9540040339

महर्षि दयानन्द की प्रेरक शिक्षाएं

कच्चे ब्राह्मणः- कच्चे ब्राह्मण अर्थात् अब्राह्मणों में ब्राह्मण्य का बड़ा ही घमण्ड रहता है। सो ठीक है, किसी धनिक को दरिद्री कहने से उसे क्रोध नहीं आता, परन्तु दरिद्री को दरिद्री कहने से बड़ा क्रोध आता है।

(उपदेश मंजरी. पूना प्रवचन पृ. 59)

कर्तव्य की बात में पाप नहींः- जिस समय आर्य लोग भारतवर्ष के वन जंगलों को काटकर अपनी बस्तियाँ और खेतियाँ बढ़ा रहे थे, उस समय सिंह आदि हिंस्र जन्तु उनके पशुओं का और स्वयं उनका प्राण-नाश करते थे और मृगादि जीव उनकी खेतियों को हानि पहुँचाते थे। जो आर्य ऋषियों ने उक्त प्राणियों का शिकार करना क्षत्रियों के लिए विहित कर दिया था। क्योंकि बिना इसके उनके प्राण धन-धान्य और पशुओं की रक्षा नहीं हो सकती थी। जो बात कर्त्तव्य होती है, उसमें पाप नहीं होता।

(महर्षि दयानन्द चरित पृ. 295)

कन्याओं को पढ़ना चाहिएः- जैसे लड़के लोग ब्रह्मचर्य करते है वैसे कन्या लोग ब्रह्मचर्य करके वर्णोच्चारण से लेकर वेदपर्यन्त शास्त्रों को पढ़कर प्रसन्न करके स्वेच्छा से पूर्ण युवावस्था वाले विद्वान् पति को वेदोक्त रीति से ग्रहण करें।- **(व्यवहारभानु पृ. 17)**

कन्या शिक्षाः- कौषीतकीय ब्राह्मण में लिखा है कि सब पुत्र वा पुत्रियाँ पाँच वर्ष की अवस्था में पाठशाला को भेजे जाते थे। यह एक सामाजिक नियम था। परन्तु माता-पिता उस सामाजिक नियम को तोड़ते तो राजसभा से उनको दण्ड मिलता था।

(पूना प्र. (उपदेश मंजरी) पृ. 14)

कन्याओं की शिक्षाः- पाठशाला में पुत्र और कन्याओं का अच्छी रीति से पढ़ने-पढ़ाने का प्रचार सदा बढ़ाते जाना चाहिए।

(ऋ0 भा0 भू0 पृ. 112)

कन्याओं की पढ़ाईः- साधारण स्त्रियों के भी उपनयन और गुरु गृह में वास इत्यादि संस्कार होते थे, यह सबको विदित ही है। गार्गी, सुलभा, मैत्रेयी, कात्यायनी आदि बड़ी-बड़ी सुशिक्षित स्त्रियाँ होकर बड़े-बड़े ऋषि मुनियों की शंकाओ का समाधान करती थीं।

(ऋ. भा. भू. पृ. 107)

हवन सामग्री

मात्र 90/- किलो

10 एवं 20 किलो

की पैकिंग में उपलब्ध

प्राप्ति स्थान

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001
मो. 9540040339

आर्यवीर दल जम्मू कश्मीर द्वारा शिविर का आयोजन

आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू कश्मीर के तत्वावधान में आर्यवीर दल जम्मू कश्मीर द्वारा चरित्र निर्माण एवं सुरक्षा शिविर का आयोजन 25 जून से 2 जुलाई 2023 तक वैदिक गुरुकुल एवं वानप्रस्थ आश्रम गढ़ी ऊधमपुर में किया जा रहा है। गौरव आर्य एवं कर्ण आर्य, आर्यवीर दल देहली से बच्चों के प्रशिक्षण हेतु पधार रहे हैं। सभी आर्यजनों से निवेदन है कि गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी यथा शक्ति तन-मन-धन से सहयोग करें और आर्यवीरों का उत्साह बढाएं।

-अरुण आर्य, मंत्री

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
के अन्तर्गत
वैदिक प्रकाशन द्वारा प्रकाशित
वैदिक साहित्य
अब
amazon
पर भी उपलब्ध
अपनी पसंदीदा वैदिक पुस्तकें घर बैठे प्राप्त करने के लिए आज ही लॉगइन करें
bit.ly/VedicPrakashan
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
मो. 09540040339, 011-23360150

सोमवार 19 जून, 2023 से रविवार 25 जून, 2023
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि. नं0 डी. एल. (एन. डी.)- 11/6071/2021-22-2023
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 21-22-23 जून, 2023 (बुध-वीर-शुक्रवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-2023
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथिः बुधवार 23 जून, 2023

गुजरात में आए तूफान पीडितों की सेवा करते हुए आर्यवीर दल टंकार ट्रस्ट के आर्यवीर

प्राकृतिक आपदाओं में आर्य समाज हमेशा आगे बढ़कर राहत बचाव और सेवा कार्यों में अग्रणी भूमिका निभाता आया है। अभी पिछले दिनों 15 जून 2023 को जब गुजरात में समुद्री तूफान आफत बनकर आया तब लाखों लोग अपने घरों और कार्यों को छोड़कर अव्यवस्थित हो गए। ऐसी स्थिति में जब लोग यहां वहां शरण ले रहे थे तब आर्य वीर दल टंकारा ट्रस्ट के आर्य वीरों ने सैकड़ों लोगों को भोजन कराया और राहत पहुंचाई। इस कार्य के लिए टंकारा ट्रस्ट के अधिकारियों और आर्य वीरों को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं।

प्रतिष्ठा में,

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व संपादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्पेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001, फोनः 23360150, 23365959, E-mail : aryasabha@yahoo.com, Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
● सम्पादकः धर्मपाल आर्य ● सह सम्पादकः विनय आर्य ● व्यवस्थापकः शिवकुमार मदान ● सह व्यवस्थापकः आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह